Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी टेस्ट-6 (बिहारी सतसई) आदर्श उत्तर कुंजी पूर्णांक 20

प्रश्न 1. जगत के चतुर चितेरों को भी मूढ़ बनना पड़ा। कवि ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर: पूर्व समय में चित्रकार किसी भी व्यक्ति का चित्र हाथों से बनाया करते थे। चित्र बनाते समय व्यक्ति को एक ही मुद्रा में चित्रकार के सामने बैठना होता था। इस नायिका की छवि पल पल में बदलती रहती थी। अत: चित्रकार जब उसकी ओर देखता था उसे उसकी मुद्रा या स्वरूप में कुछ अन्तर दिखाई देता था। इस कारण चित्रकार उसका यथावत चित्र नहीं बना पाता था। इसी कारण वह मूर्ख सिद्ध होता था।

प्रश्न 2. कवि बिहारी का साहित्यिक परिचय दीजिए 4

गागर में सागर भरने वाले रीतिकाल के महान कवि बिहारी का जन्म सन् 1595 ई. ग्वालियर के निकट बसुआ नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था उन्होंने आमेर के राजा मिर्जा जयसिंह के दरबार में पहुँचकर अल्पवयस्का रानी के मोहपाश में राज-कर्तव्य भूले राजा को एक दोहे के द्वारा सावचेत किया काव्य-पारखी राजा ने उनका सम्मान किया व अपने दरबार में सम्मानजनक स्थान दिया। बिहारी ने 'सतसई' की रचना की।

कवि ने भक्ति, नीति, श्वृंगार, प्रकृति-चित्रण, ज्योतिष एवं बहुआयामी ज्ञान पर आधारित दोहों की रचना कर अक्षय कीर्ति अर्जित की वे निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित हुए तथा राधा-कृष्ण की भक्ति की। उनकी रचनाओं में उक्ति वैचित्र्य , अन्योक्ति अर्थ गाम्भीर्य , अर्थ-विस्तार अलंकारिकता तथा कल्पना की समाहार शक्ति का विलक्षण समावेश है। उनकी समाहार शक्ति के कारण ही कहा गया है- सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर। देखन में छोटे लगे घाव करे गम्भीर।

इनकी मृत्यु सन् 1663 ई. में हुई।

प्रश्न 3. 'अनुरागी चित्त' की कवि ने क्या विशेषता बताई है? इसका आशय क्या है? स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर: कवि कहता है इस अनुराग (प्रेम) में मग्न हृदय की अद्भुत प्रकृति को समझ पाना बड़ा कठिन है। यह ज्यों-ज्यों श्याम (काला) रंग में डूबता है, उतना ही उतना उजला होता चला जाता है। यह परस्पर विरोधी कथन है। इस कथन का आशय है कि व्यक्ति जितना-जितना श्याम (श्रीकृष्ण) के रंग (भक्ति या प्रेम) में डूबता है , त्यों-त्यों उसका हृदय पवित्र और प्रसन्न होता चला जाता है।

प्रश्न 4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए (कोई दो) 4×2=8

(1) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झांई परे, श्याम हरित दुति होई॥

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि बिहारी के दोहों से लिया गया है। कवि ने आलंकारिक भाषा में राधाजी की स्तुति की है।

व्याख्या- कवि बिहारी कहते हैं कि वे राधा उनके सांसारिक कष्टों को दूर करें जिनके सुंदर स्वरूप की झलक मात्र पड़ने से अथवा देखने से श्रीकृष्ण अत्यंत प्रसन्न हो जाते हैं।

(श्लेष अलंकार के अनुसार अन्य अर्थ) वे चतुर राधा मेरी भव बाधाएँ दूर करें जिनकी झलकमात्र पड़ने से श्याम(पाप) प्रभावहीन हो जाते हैं। अथवा जिनके शरीर की सुनहरी कान्ति पड़ने से श्रीकृष्ण के शरीर की नीली कान्ति हरे रंग की हो जाती है।

विशेष-

(i) कवि ने राधा की स्तुति के साथ-साथ अपनी आलंकारिक शब्दावली से अर्थ में चमत्कार भी उत्पन्न किया है।

(ii) समर्थ ब्रजभाषा का प्रयोग है।

(iii) वर्णन-शैली आलंकारिक और चमत्कार प्रदर्शन युक्त है।

(iv) 'श्याम' तथा 'हरित दुति' में श्लेष अलंकार है।

(2) कब को टेरतु दीन रट, होत ने स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत गुरु, जग नायक जग बाइ॥

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि बिहारी के दोहों से लिया गया है। कवि अपने प्रभु की उपेक्षा से आहत है। वह उसकी दीनता भरी पुकार को नहीं सुन रहे हैं।

व्याख्या- कवि कहता है-हे प्रभु! मैं कब से दीनता भरी पुकार से आपको अपनी सहायता के लिए पुकार रहा हूँ पर आप मेरी दीन-पुकार को अनसुनी किए जा रहे हैं। हे श्याम ! हे जगत पूज्य! हे जगन्नायक! कहीं ऐसा तो नहीं कि आप को भी सांसारिक हवी लग गई हो। आपने भी सांसारिक गुरुओं और नायकों के समान दोनों की अपेक्षा करना आरम्भ कर दिया हो। यदि ऐसा न होता तो मेरी करुण पुकार सुनकर आप मेरी सहायता करने अवश्य आते।

विशेष-

(i) कवि ने अपने इष्ट श्रीकृष्ण को द्रवित करने के लिए चतुराई भरे तर्कों का सहारा लिया है।

(ii) भाषा लक्षणाशक्ति और वचन वक्रता से प्रभावशाली बनाई गई है।

(iii) कथन शैली उपालम्भ तथा व्यंग्यपूर्ण है।

(iv) कवि ने सखा भाव की भक्ति द्वारा अपने इष्ट को रिझाया है।

(3) को छूट्यौ इहि जाल परि, कत कुरंग अकुलात।
ज्यौं-ज्यौं सुरझि भज्यौ चहत, त्यौं त्यौं उरझत जात॥

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि बिहारी लाल के दोहों से लिया गया है। कवि सांसारिक विषयों में लिप्त लोगों की दशा पर खेद व्यक्त करते हुए, उन पर व्यंग्य कर रहा है कि इन विषयों के जाल में जो एक बार हँस गया , उसका इनसे छूट पाना बड़ा कठिन होता है।

व्याख्या- कवि सांसारिक बन्धनों में जकड़े हुए लोगों को संबोधित करते हुए कह रहा है-अरे बावले हरिण। तू जिस जाल में फंस गया है उससे आज तक कौन छूट पाया है। तू व्यर्थ छटपटा रहा है। इस जाल में जो जीव एक बार फँस जाता है , वह जितना-जितना छूटने का प्रयत्न करता है , उतनी ही और इसमें फंसता चला जाता है।

अन्योक्ति के अनुसार अर्थ है- अरे सांसारिक सुखभोगों के जाल में फंसे पड़े मनुष्य! इन झूठे सुखों

के जाल में फंस जाने पर , इनसे छूट पाना असम्भव हो जाता है। इनके दुखमय परिणामों से त्रस्त होकर , अब तू छूटने को छटपटा रहा है, तेरा यह प्रयास व्यर्थ है। तू जितना ही इनसे छूटने का प्रयत्न करेगा , ये तुझे उतना ही और उलझाते चले जाएँगे।

विशेष-

(i) कवि ने सांसारिक विषयों की असारता की ओर संकेत करते हुए , मनुष्यों को इनसे दूर रहने की चेतावनी दी है।

(ii) 'जाल में फंसे हरिण ' की दशा से विषय-जाल में पड़े मनुष्यों की तुलना बड़ी सटीक है। हरिण जाल से छूटने के लिए जितछटपटाता है , जाल उसे उतना ही कसता चला जाता है।

(iii) कवि ने संकेत दिया है कि मनुष्य को संयमित जीवन बिताते हुए और भगवान पर आस्था रखते हुए जीवन बिताना चाहिए।

(iv) कवि माया पर अधिकार और प्रतीकात्मक शैली की कुशलता का परिचय कराया है।

(v) दोहे में अन्योक्ति, पुनरुक्ति तथा अनुप्रास का सही प्रयोग है।

इस प्रश्न-पत्र की
आदर्श उत्तर-कुंजी आप
03:00 बजे बाद इस लिंक
https://tinyurl.com/y66j6z98
से डाउनलोड कर सकते हैं।

कक्षा 12 (अनिवार्य हिन्दी - सृजन) परीक्षा की दृष्टि से सरल व आसान व्याख्या एवं हल प्रश्न उत्तर सहित Free PDF Download इस से कीजिए-
https://tinyurl.com/y6tpcbsp

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg